a2zpapers.com

Exam. Code : 216303
Subject Code : 4360

M.A. Hindi 3rd Semester

SURDAS

Paper–XV, Opt. (i)

Time Allowed—3 Hours] [Maximum Marks—80

नोट :— यह प्रश्न-पत्र **दो** भागों में विभाजित है । निर्देशानुसार उत्तर दें ।

भाग–I

यह भाग **दो** उपभागों में विभक्त है । निर्देशानुसार उत्तर दें ।

उपभाग–क

निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 4×6=24

1. अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल ।
काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा-सब्द-रसाल ।
भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल ।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना बिधि दै ताल ।
माया को कटि फेटा बाँध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल ।
कोटिक कला काछि दिखराई, जल-थल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नँदलाल ।।

www.a2zpapers.com www.a2zpapers.com
oad free old Question papers gndu, ptu hp board, punjab

a2zpapers.com

2. सोभा सिंधु न अन्त रही री ।
नंद भवन भरि पूरि उमँगि चलि, ब्रज की बीथिनि फिरति वही री ।
देखी जाइ आजु गोकुल मैं, घर-घर बेंचति फिरति दही री।
कहँ लगि कहौं बनाइ बहुत विधि, कहत न मुख सहसहूँ निबही री ।
जसुमति-उदर-अगाध-उदधि तैं उपजी ऐसी सबनि कही री।
सूरश्याम प्रभु इंद्र-नीलमनि, ब्रज-बनिता उर लाइ गही री ।।

3. मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै नागिनि सी भुइँ लोटी ।
काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी ।
सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी ।।

4. ब्रह्मा बालक - बच्छ हरे ।
आदि अंत प्रभु अंतरजामी, मनसा तैं जु करे ।
सोइ रूप वै बालक गौ-सुत, गोकुल जाइ भरे ।
एक बरष निसि बासर रहि सँग, काहु न जानि परे।
त्रास भयौ अपराध आपु लखि, अस्तुति करत खरे ।
सूरदास स्वामी मनमोहन, तामैं मन न धरे ।।

5. मधुकर आपुन होहिं बिराने ।
बाहर हेतु हितू कहवावत, भीतर काज सयाने ।
डयौं सुक पिंजर माहिं उचारत, ज्यौं ज्यौं कहत बखाने।
छूटत हीं उडि मिलै अपुन कुल, प्रीति न पल ठहराने।
जद्यपि मन नहिं तजत मनोहर, तद्यपि कपटी जाने ।
सूरदास प्रभु कौन काज कौं, माखी मधु लपटाने ।।

www.a2zpapers.com www.a2zpapers.com
ad free old Question papers gndu, ptu hp board, punjab

a2zpapers.com

6. ऊधौ इतनी कहियौ जाइ ।
अति कृसगात भईं ये तुम बिंनु, परम दुखारी गाइ ।
जल समूह बरषतिं दोउ अंखियां हुंकति लीन्हैं नाउँ ।
जहां जहां गो दोहन कीन्हो, सूँघति सोई ठाउँ ।
परतिँ पद्दार खाइ छिन ही छिन, अति आतुर ह्वै दीन ।
मानहु सूर काढ़ि डारी हैं, बारि मध्य तैं मीन ।।

उपभाग–ख

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 4×6=24

1. सूरकाव्य में लोक संस्कृति पर चर्चा करें ।
2. कृष्ण भक्ति काव्य में सूरदास का स्थान निधारित करें ।
3. सूर काव्य में भक्ति के दास्य रूप का वर्णन करें ।
4. सूरकाव्य में आए विभिन्न बिम्बों पर चर्चा करें ।
5. सूरकाव्य में पद-रचना पर चर्चा करें ।
6. सूरकाव्य में अलंकारों पर चर्चा करें ।

भाग–II

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 2×16=32

1. सूरकाव्य में निर्गुण-सगुण द्वन्द्व पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।
2. कृष्ण-भक्ति काव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इसकी उपलब्धियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें ।
3. सूरकाव्य में गीति तत्व पर सोदाहरण चर्चा करें ।

www.a2zpapers.com www.a2zpapers.com
oad free old Question papers gndu, ptu hp board, punjab